विश्व संगीत मार्तण्ड पदभूषण आचार्य पं. गोकुलोत्सवजी महाराज

शास्त्रीय संगीत के बहुआयामी स्तम्भ, वशस्वी एवं मूर्धन्य गायक पदभूषण आचार्य पं. गोकुलोत्सवजी महाराज हमेरे देश की एक ऐसी महान विभूति है जिनका व्यक्तित्व असाधारण, बहुचक्षी और अनन्तकाल विभूति है। आपने अपनी कठिन संगीत साधना और शास्त्रों के अनुशौच से भारतीय संगीत, साहित्य एवं संस्कृति को गोवाधिकृत किया है। गोकुलोत्सवजी के लिए संगीत मनोरंजन नहीं, अपनु इंस्प्रिय योग की सुगमत्र लिए हुए दिशा और अलौकिक अनुभूति है, एक महान विचार एवं दास्त की धारा है।

आप स्वर के प्रभु की आराधना का सेतु गानने वाले गोवा हैं | महाराजजी की शास्त्रीय यात्रा बहुत बाल्यावस्था से ही आरम्भ हुई | आपकी बंजर परंपरा में वेद-वेदान्त, प्रष्ठ, छंद, सामग्री, साहित्य, व्याकरण इत सब प्रभावी विद्याओं के शिक्षान के परिपारा रही है | आपकी परंपरा में सीमा, जिसके सामग्री की पद्धति है, उसके अनुभव की भी परंपरा है और आप इसके अथिकारी दीक्षित विद्वान हैं।

आपने अपनी विद्वान, अमरीका यह महाराजजी ने इस यज्ञ का अनुभव करके भारतीय संस्कृति का विदेश में भी प्रचार किया है। रंग, साहित्य और संगीत सभी एक्षेत्र में व के बाद में पं. मोरेटेकल्डो गोवाधिकृत साहि से संस्कृत स्थित प्राण की कई अपरिशिवत राग आपने उनसे सीखे | ईंटकेर के उस्ताद आमर खान की गायन की स्मृति पर भारतीय को अपने गायन को अवीरिकारी रंग दिया।

विज्ञान शास्त्रों के चिन्तन, मनन, भावना से आपने संस्कृत के सीमाओं में कई गंगों का लेखन किया है | 'मंदिर पूजा' उपनाम से महाराजजी ने पांच हजार से भी अधिक रचनाएं, काव्य, छंद आदि की रचना की है जिनमे कई धारा, धमाल, ध्वनि, दराज, प्रशंसा, रागमालाएं प्रदान है इनमें संस्कृत, हिंदी के छंदों-मंददक्षित, द्वीपेक्ष, इन्द्रवध, ध्वनिविनोद, वृक्षविन, अघोयर, नीरद बहुत भी है | रंग, रस, साहित्य और संगीत सभी एक्षेत्र से ये रचनाएं उच्चकोटी की हैं | ऐसे बहुत कम कलाकार हैं जो संगीत मार्तण्डों की हावी है और शास्त्र के विद्वान भी। आपकी विभिन्न गायन के संगीत प्रदान अत्यावश्यक और आध्यात्मिकता से अभावरहित हैं | आपने अपनी रचनाओं को इस प्रकार दास्ता है उनके वैष्णव को संगीत का अभिक रंग, सिख का सुरत संदर्भ और सुवी और सुवी विभिन्न गायन के अधीन विद्वान का बोहो नीता है | (महाराजजी की कई स्वर्णित रंगों का लेखक दुर्भाग्य दो पुस्तकों के अंतर्गत स्वर्णित बदल दिया गया है) | पं. गोकुलोत्सवजी में कई नवीन गायन की हावी समझने की है – अनुदारसार, प्रसन्नपद, मधुमल्ह, वेंड गंधा या दिशा मंगधा, भारत कल्याण महाद्वी.।
महाराज जी प्रचलित रागों, तालों के अलावा अप्रचलित अछोप रागों - लच्छासाख, भाव साख, ककुभ, मलुहा, जिंगक, हेम कामोद, खट इत्यादि में, तालों में - चक, मंत, मंग, गणेश, शंकर, मुह, सद्दात इत्यादि में गायन बहुत सहजता पूर्वक करते हैं, जो आपके अद्वैत ध्वनि व्यक्ति का परिवर्तन है। इस प्रकार सात स्िरों का महासागर आपकी गायकी की गायन में भरा हुआ है। आपका मानना है, "सुर का साम्राज्य सब दूर है। गाय का या िादक सित्रित सुर की परंपरा में है। ईविर की परंपरा में है और िही उसका दहन्दुस्तानी घराना है।" महाराजजी की गायन शैली में उन सभी तत्त्वों का समासी है जो भारतीय संगीत की सनातन शास्रीय परंपरा और िैदक सामगान पद्धत में विद्यमान है। आपने अगार्त तनष्िा, समपतण और कदिन तपस्या से ध्रुपद, र्मार, ख्याल, तराना, प्राचीन प्रबन्धादि, सामगान, पुष्पिक्षाग्य पर गान तथा अन्य कई दुर्लभ और प्राचीन विधाओं में दक्षता प्राप्त की है। पं. गोकुलोत्सिजी की गायन शैली में उन सभी तत्त्वों का समासी है जो भारतीय संगीत की सनातन शास्रीय परंपरा और िैदक सामगान पद्धत में विद्यमान है। आपने अपने मोतिक विचार, अभिव्यक्ति नाव और सृजनात्मक प्रतिमा से अपनी गायकी को नवीनित आयाम और नृत्य दिशा दी है। आपकी गायकी में जहां ध्रुपद की दृढ़ता, गाम्भीयता और ओजश्चत है, बाहर ख्याल गायकी में स्विन्ता, रसात्मकता, रंजकता, मार्ुयत एि भाबप्रिणता है। पं. गोकुलोत्सिमहाराज जी ने भारतीय दशतन, स्िास्त्र, योग, ज्योतिष और संगीत के पारस्पररक अन्तसतम्बंर को स्थापित करते हुए देश-विदेश में इनका तनिःशुल्क और सफल प्रयोग ककया है। आपका मानना है कक तनयसमत गाने से आप पाएंगे कक आप सबसे ज्यादा स्िस्थ हैं, कफट हैं। इसे हम प्राणायाम, अतनलायाम कहते हैं। गायन से बाहर स्वत्न असद्ध हो जाता है, प्रयत्न नहीं करना पड़ता। संगीत परमात्मा की समृद्धि भरी भािप्रिणता है।